ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–८९
दिनांक- मंगलवार, २९ नवम्बर, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 28.3 एवं 12.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 52 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.8 एवं दोपहर में 26.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(30 नवम्बर–04 दिसम्बर, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 30 नवम्बर–04 दिसम्बर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में अगले एक–दो दिनों तक हल्के बादल आ सकते है उसके बाद आसमान साफ रहने की सम्भावना है। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4–6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- रबी मक्का की बुआई अतिशीघ्र संपन्न कर लें। अगात बोयी गयी मक्का की फसल में निकौनी एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें।
- गन्ना की रोपाई के लिए स्वस्थ बीज का चयन करें। इसके लिए बी0ओ0–146 , को0पु0 –2061, को0पु0 –09437 , राजेंद्र गन्ना–1, बी0ओ–91, बी0ओ–153 एवं बी0ओ0–154 किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुषंसित हैं। कार्वेन्डाजिम दवा के 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर गन्ना के गेड़ियों को 10–15 मिनट तक उपचारित कर रोपाई करें। दीमक, कल्ला एवं जड़ छिद्रक कीट से बचाव हेतु बीज को क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0 का 5 लीटर प्रति हेक्टेयर रोपनी के समय पोरियों पर सिराउर में छिड़काव करें।
- गत माह के लगाये गये आलू की फसल में पौधों की उँचाई 12–15 से0मी0 हो जाने पर आलू में निकौनी कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- सिंचित एवं समयकालीन गेहूँ की किस्मों की बुआई किसान भाई 10 दिसम्बर तक अवश्य संपन्न कर लें। उत्तर बिहार के लिए सिंचित एवं समयकालीन गेहूँ की सी0बी0डब्लू0–38, डी0बी0डब्लू0–39, डी0बी0डब्लू0–187, एच0डी0–2733, एच0यू0डब्लू0–465, एच0डी0–2967, एच0डी0–2824 एवं एच0यू0डब्लू0–468 किस्में अनुषंसित है। बीज को बुबाई से पहले बेबीस्टीन 2.5 ग्राम की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। दीमक से बचाव के लिए क्लोरपायरिफॉस 20 ई0सी0 दवा का 8 मि0ली0 प्रति किलोग्राम बीज की दर से अवष्य उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें। बुआई पूर्व खेत में 150–200 क्विटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- चना की बुआई 10 दिसम्बर तक अवश्य संपन्न कर लें। खेत की तैयारी के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉसफोरस, 20 किलोग्राम पोटास एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा–256, के0पी0जी0–59(उदय), के0डब्लू0आर0 108, पंत जी 186 एवं पूसा 372 अनुषंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मि0ली0 प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें। छोटे दानों की किस्मों के लिए बीज दर 75 से 80 किलोग्रम एवं बड़े दानों के लिए 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा दूरी 30X10 से0मी0 रखें।
- राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम एवं राजेन्द्र राई पिछेती की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करने का प्रयास करें। राई की फसल जो 20 से 25 दिनों की हो गयी है उसमें निकौनी तथा बछनी कर पौघे से पौघे की दूरी 12–15 से0मी0 रखें। आवश्यकतानुसार सिंचाई करे।
- गोभी की फसल में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू गोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुँचाती हैं। शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियो को खाता है। इस कीट से वचाव हेतु स्पेनोसेड 48 इ0सी0 दवा एक मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए एक मि0ली0 गोन्द प्रति लीटर पानी में डालें।
- सब्जियों वाली फसल में निकौनी एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू फल में घुसकर अन्दर से खाकर पूरी तरह फल को नष्ट कर देते हैं, जिससे प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है और वे खाने लायक नहीं रहते, पूरी फसल बरबाद हो जाती है। फल छेदक कीट से बचाव हेतु खेतों में पक्षी बसेरा लगायें। कीट का प्रकोप दिखाई देने पर सर्वप्रथम कीट से क्षतिग्रस्त फलों की तुराई कर नष्ट कर दें एवं उसके बाद स्पीनेसेड 48 ई0सी0 / 1 मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- अगात मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। चने, मटर और टमाटर की फसल में फली छेदक कीट निगरानी करें। कीट से बचाव हेतु फिरोमोन प्रपंश / 3–4 प्रपंश प्रति एकड़ की दर से लगायें।
- चारे के लिए जई तथा बरसीम की बुआई करें। दूधारु पशुओं के रख–रखाव एवं खान पान पर विषेश ध्यान दें। पशुओ को रात में खुले स्थान पर नहीं रखें।

आज का अधिकतम तापमानः 29.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 12.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)